इकाई 3 निर्देशन कार्यक्रम में कार्मिक

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 निर्देशन कार्यक्रम और निर्देशन कार्मिकों की आवश्यकता

- 3.3.1 निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकता
- 3.3.2 निर्देशन कार्मिकों की आवश्यकता

3.4 निर्देशन कार्मिकों के रूप में उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक

3.5 निर्देशन कार्मिकों की भूमिका

- 3.5.1 उपबोधक/परामर्शदाता
- 3.5.2 वृत्तिक उपबोधक
- 3.5.3 अध्यापक
- 3.5.4 उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की तुलनात्मक भूमिकाएँ

3.6 विद्यालयों में आवश्यकता आधारित न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम और कार्मिकों की भूमिका

3.7 सारांश

3.8 इकाई के अंत में अभ्यास कार्य

3.1 प्रस्तावना

आप इस तथ्य से परिचित हैं कि मानव संसाधन विकास हमारे सभी मानवीय कार्यकलापों का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है और इसी तरह यह शिक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है। शिक्षा एक सशक्त क्षेत्र (potential area) है जो मानव संसाधन विकास में सहायता करता है। पढ़ना, लिखना और अंकगणित (हिसाब-किताब) ही शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नहीं हैं बल्कि यह तभी पूरा होता है जब किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वतोमुखी विकास ही जाता है। आप जानते ही हैं कि मार्गदर्शन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निर्देशन शैक्षिक प्रक्रिया में सहायक भूमिका निभाता है। वास्तव में निर्देशन शिक्षा का अभिन्न अंग है। मार्गदर्शन प्रत्येक व्यक्ति को निर्देशित करता है व उसमें उसकी पूर्णतम क्षमता विकसित करने के लिए सहायता करता हैं। निर्देशन कार्यक्रम में उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक/वृत्तिक अध्यापक और अध्यापक को शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में विशिष्ट भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं।

विद्यालयों में व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम के लिए एक पूर्णकालिक उपबोधक और अन्य साज-सज्जा की आवश्यकता होती है। परन्तु पूर्णकालिक उपबोधक के अभाव में, जैसा कि वर्तमान में हमारे विद्यालयों में होता है, वृत्तिक, उपबोधक और अध्यापक की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। यद्यपि वृत्तिम उपबोधक जो कि निर्देशन में प्रशिक्षित होता है फिर भी विद्यालयों में निर्देशन कार्यकलाप आयोजित करने में उसकी अपनी सीमाएँ होती हैं। निर्देशन और उपबोधन में प्रशिक्षित न होने के कारण अध्यापक की भूमिका भी बहुत सीमित हो जाती है।

पूर्णकालिक निर्देशन कार्मिकों के अभाव में विद्यालयों में आवश्यकता-आधारित न्यनूतम निर्देशन कार्यकलाप आयोजित किए जा सकते हैं। तथापि पूर्णकालिक उपबोधक होने के

बावजूद भी वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिका स्वाभाविक रूप से सहायक होती है। अभिभावक और स्वैच्छिक संगठन भी निर्देशन कार्यकलाप आयोजित करने की दिशा में अपनी भूमिकाएँ निभाते हैं। अतः निर्देशन एक सहकारी कार्य कहा जाता है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- विद्यालयों में निर्देशन और निर्देशन कार्मिकों की आवश्यकता को समझ सकेंगे;
- निर्देशन कार्यक्रम की दृष्टि से उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक शब्दों की संकल्पना को समझ सकेंगे;
- निर्देशन कार्यक्रम में उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विभिन्न निर्देशन कार्मिकों द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों की रूपरेखा प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विद्यालयों में आवश्यकता-आधारित न्यूनतम मार्गदर्शन कार्यक्रमों की योजना बना सकेंगे एवं उन्हें संचालित कर सकेंगे; तथा
- उपबोधकों, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिका की तुलना कर सकेंगे।

3.3 निर्देशन कार्यक्रम और निर्देशन कार्मिकों की आवश्यकता

3.3.1 निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकता

निर्देशन एक ऐसा कार्य है, जो शैक्षिक कार्यक्रम के साथ तो नहीं जोड़ा जा सकता है तथापि यह इस कार्यक्रम का एक अपरिहार्य अंग है। आज विश्व जटिल हो गया है। एक पीढ़ी के बाद जीवन का पूरा ढांचा मूल रूप से बदल जाता है। ये परिवर्तन निर्देशन सेवाओं को शिक्षा का अमूल्य और अपरिहार्य अंग बनाते हैं। निर्देशन को विशेष मनोवैज्ञानिक अथवा सामाजिक सेवा नहीं समझा जाना चाहिए जो सतही दृष्टि में शिक्षा से जुड़ा है। कुछ लोगों का विचार है कि निर्देशन व्यावसायिक प्रशिक्षण के बिना संभव नहीं है। कोई भी व्यक्ति बालक की कुछ अधिक जटिल निजी-सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में उसकी सहायता करने के लिए व्यावसायिक सेवा की आवश्यकता को नकार नहीं सकता। तथापि कोई भी मार्गदर्शनोन्मुख अध्यापकों की भूमिका का भी अनुमान लगा सकता है। अध्यापक शैक्षणिक, व्यावसायिक परिपक्वता, निजी और सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में बालकों की वृद्धि और विकास को बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए देखें ई.एस. 363 की इकाई 6 'निर्देशन कार्यक्रम'।

3.3.2 निर्देशन कार्मिकों की आवश्यकता

निर्देशन का आधार अच्छे मानवीय संबंधों में निहित है। विद्यालय का एक विद्यार्थी लगातार अपने सहपाठियों, विद्यालय के स्टाफ सदस्यों, अपने परिवार के सदस्यों और समुदाय के साथ अंतःक्रिया करता रहता है। इन सभी व्यक्तियों का विद्यार्थी के जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अधिकांश मानव समय-समय पर जीवन भर कठिन निर्णयों को लेने में दूसरे लोगों की सलाह, परामर्श और सहायता पर निर्भर रहते हैं। विद्यालयी विद्यार्थी को भी अपने व्यक्तित्व के सभी पहलुओं के संबंध में अपने निर्माणात्मक वर्षों (formative years) में निर्देशन

की आवश्यकता पड़ती है। वह हमारी संस्कृति के अनुसार (शारीरिक रूप से), बौद्धिक रूप से और भावात्मक रूप से विकास करता है ताकि वह समाज का एक सुसमायोजित सदस्य बन सके। इसलिए निर्देशन में पर्याप्त और सुप्रशिक्षित कार्मिकों की आवश्यकता का एक स्पष्ट कारण मूल रूप से वयस्कों पर बालकों का निर्भर होना है। विद्यालयों में निर्देशन कार्मिकों को रखने का अन्य कारण सामाजिक, वृत्तिक, व्यावसायिक और शैक्षिक जीवन के लगभग सभी पहलुओं में अत्यधिक जटिलता की वृद्धि और विकास के होने से उत्पन्न होता है। आजकल हमारे विद्यालय पढ़ना, लिखना और हिसाब-किताब सिखाने तक ही सीमित नहीं हैं। घर भी निजी और सामाजिक समस्याओं जैसी कुछ बातों का ध्यान रखता है। परन्तु समय बदल गया है और बालकों तथा युवाओं का निर्देशन करने के लिए प्रशिक्षित कार्मिकों की अधिक से अधिक आवश्यकता है। चूँकि समाज अधिकाधिक जटिल होता जा रहा है, इसलिए समाज से जुड़ी जानकारी देने की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। अतः विद्यार्थी बालक के जीवनयापन संतोषप्रद रूप से करने के लिए, अपनी क्षमताओं और सीमाओं को जानने हेतु प्रशिक्षित कार्मिकों से सहायता प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। निर्देशन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विद्यालय में सुशिक्षित निर्देशन कार्यकर्ता पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होने चाहिए। पहले निर्देशन की आवश्यकता मूलरूप से व्यावसायिक नियोजन तक सीमित थी। अब इसका व्यापक अर्थ में प्रयोग हो रहा है।

व्यक्ति विशेष की समग्रतावादी अवधारणा के कारण निर्देशन कार्य के लिए अधिक कार्मिकों की आवश्यकता होती है। निर्देशन कार्य केवल विद्यालय का कार्य नहीं है बल्कि यह तो विद्यालय, घर, समुदाय और देश में रह रहे लोगों का संयुक्त कार्य है। निर्देशन कार्य के लिए समर्पित कार्मिक व्यक्ति के विकास करने और उसकी अपनी समस्याओं को सुलझाने तथा संतोषपूर्वक रहने में एवं उसको तथा समाज को लाभ पहुँचाने में उसकी सहायता करते हैं।

हम व्यापक अर्थ में यह कह सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति जो विद्यालयी विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास में पर्याप्त सहायता करे, वह निर्देशन का कार्मिक होता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) निर्देशन शिक्षा का अतिरिक्त दायित्व है। (सही / गलत)

ii) निर्देशन शिक्षा का अपरिहार्य अंग है। (सही / गलत)

iii) निर्देशन विद्यार्थियों की संवृद्धि और विकास में सहायता करता है। (सही / गलत)

iv) अच्छे मानव संबंध निर्देशन की पहली शर्त है। (सही / गलत)

v) कोई भी व्यक्ति विद्यालयों में मार्गदर्शन आरंभ कर सकता है। (सही / गलत)

vi) सभी अध्यापक निर्देशन कार्यकर्ता नहीं होते। (सही / गलत)

vii) निर्देशन कार्यक्रमों में प्रशिक्षित कार्मिकों की आवश्यकता नहीं पड़ती। (सही / गलत)

viii) उपबोधक ही एकमात्र व्यक्ति होता है जो निर्देशन कार्य कर सकता है। (सही / गलत)

ix) बालक की शिक्षा और उसके वृत्तिक नियोजन (career planning) में निर्देशन कार्यकर्ताओं का मत ही अंतिम निर्णय होता है। (सही / गलत)

x) प्रधानाचार्य / मुख्य अध्यापक निर्देशन कार्मिक नहीं होता। (सही / गलत)

3.4 निर्देशन कार्मिकों के रूप में उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक

आप सभी स्तरों पर विद्यालयों में निर्देशन कार्यकलापों की आवश्यकता के बारे में और इन कार्यकलापों को कार्यान्वित करने के लिए निर्देशन कार्मिकों की जरूरत के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। निर्देशन कार्मिकों में उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक, अध्यापक, प्रधानाचार्य / मुख्य अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ता, मनोविज्ञानी (psychologist), मनोचिकित्सक (psychiatrist), चिकित्सक आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, अभिभावक और समुदाय भी बालकों को मार्गदर्शन प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ पर पूर्णकालिक निर्देशन कार्मिकों और अंशकालिक अथवा अनियत निर्देशन कार्मिकों को वर्गीकृत किया जाना चाहिए। सबसे पहले उपबोधक आता है। उपबोधक वह व्यक्ति होता है जो पूर्णकालिक निर्देशन कार्यकर्ता होता है। उपबोधक पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित और व्यावसायिक रूप से योग्य व्यक्ति होता है जो परीक्षण कर सके तथा बालकों को परामर्श और सूचना प्रदान कर सके। उपबोधक विद्यालय में सूचना केन्द्र और निर्देशन निदान केन्द्र (Guidance clinic) की देखरेख करता है। यद्यपि उपबोधक पूर्णकालिक निर्देशन प्रदाता होता है, फिर भी उसे सभी अध्यापकों, कर्मचारियों और शिक्षा विभाग आदि के सहयोग की आवश्यकता होती है क्योंकि निर्देशन कार्य एक सहयोगात्मक प्रयास है।

वृत्तिक उपबोधक मूलरूप से विद्यालय का एक अध्यापक होता है जो अपने प्रशिक्षण और अभिमुखीकरण के कारण मार्गदर्शन कार्य से जुड़ा होता है। उसे मार्गदर्शनोन्मुखी अध्यापक भी कहा जा सकता है। वृत्तिक उपबोधक वह व्यक्ति है जो शैक्षिक और व्यावसायिक सूचना को एकत्र करने और प्रसारित करने की कला में प्रशिक्षित होता है।

इसके अतिरिक्त उसे अद्यतन और विश्वसनीय सूचना के साथ विद्यालय में सूचना केंद्र की देखरेख करनी चाहिए। वृत्तिक उपबोधक पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं होता किंतु निर्देशन के संबंध में उसको कुछ ज्ञान होता है जो विद्यालयों में न्यूनतम निर्देशन कार्यकलाप आयोजित करने में उसकी सहायता करता है। निर्देशन कार्यकलापों के आयोजन में, विद्यालय के अध्यापक की तुलना में वृत्ति उपबोधक अधिक उपयुक्त कार्मिक होता है।

निर्देशन प्रदाता व्यक्ति के रूप में अध्यापक को निर्देशन कार्य करने का कम अवसर मिलता है। परन्तु मूलरूप से अध्यापक ही मार्गदर्शन कार्यकर्ता होता है क्योंकि वहीं विद्यार्थी के साथ सारे दिन रहता है। अध्यापकों को निर्देशन की दिशा में प्रशिक्षण और अभिमुखीकरण हमारे आज के संदर्भ में बहुत कम प्राप्त है। वस्तुतः किसी भी निर्देशन कार्यक्रम की सफलता विद्यालयों में सभी अध्यापकों के सहयोग पर निर्भर करती है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

2) निम्नलिखित की संक्षेप में परिभाषा दीजिए।

i) उपबोधक

.....

.....

.....

.....

.....

ii) वृत्तिक उपबोधक / वृत्तिक अध्यापक (अध्यापिका)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) अध्यापक / अध्यापिका

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) परामर्श देने में उपबोधक की आवश्यकता नहीं पड़ती। (सही / गलत)

ii) वृत्तिक उपबोधक परामर्श के मामलों को ले सकता है। (सही / गलत)

iii) यदि उपबोधक उपलब्ध हो तो फिर वृत्तिक उपबोधकों अथवा अध्यापकों की आवश्यकता नहीं होती। (सही / गलत)

iv) वृत्तिक उपबोधक परीक्षण सेवा भी कर सकता है। (सही / गलत)

v) वृत्तिक उपबोधक विद्यालय में पूर्णकालिक निर्देशन देने वाला व्यक्ति होता है। (सही / गलत)

3.5 निर्देशन कार्मिकों की भूमिका

अब आप तीनों महत्त्वपूर्ण निर्देशन कार्मिकों में से प्रत्येक की भूमिका के बारे में विस्तार से जानने की स्थिति में आ गए हैं। इसलिए अब हम एक-एक करके अर्थात् उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक के बारे में आगामी उपभागों में चर्चा करेंगे।

3.5.1 उपबोधक / परामर्शदाता

मूल रूप से परामर्शदाता एक प्रशिक्षित विशेषज्ञ होता है और उससे विद्यालय में निर्देशन कार्य निष्पादित करने की आशा की जाती है। एक उपबोधक के रूप में कार्य करने पर एक निर्देशन कार्यकर्ता के दायित्वों में अनेक विशिष्ट क्षेत्र आते हैं। इन क्षेत्रों को व्यापक रूप से प्रत्येक क्षेत्र के आधीन विशिष्ट सेवाओं और कौशलों के साथ (क) नैदानिक (diagnostic), (ख) चिकित्सापरक अथवा उपचारात्मक (therapeutic), (ग) मूल्यांकनपरक और अनुसंधानपरक वर्ग में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करके, उपलब्ध भौतिक और अन्य संसाधनों को एकत्र करके तथा प्रशासनिक अधिकारियों का सहयोग सुनिश्चित करके, उपबोधक विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम को सावधानीपूर्वक विकसित करने के बाद उसे सही ढंग से कार्य रूप में परिणत करता है।

एक उपबोधक के विशिष्ट कार्यों को निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर रेखांकित (वर्गीकृत) किया जा सकता है :

1) विद्यार्थियों का अभिमुखीकरण
2) विद्यार्थी आकलन
3) शैक्षिक और व्यावसायिक सूचना सेवा
4) परामर्श साक्षात्कार का आयोजन
5) नौकरी (placement) में लगाना
6) अनुसंधान तथा मूल्यांकन

उपबोधक को निम्नलिखित बातों की भी विशेष रूप से जानकारी रखनी चाहिए :

1) विद्यार्थी आकलन कार्यविधियाँ और विद्यार्थी व्यवहार समझने हेतु व्यवहार को पीछे कार्यवृति करना;
2) शैक्षिक और व्यावसायिक सूचना जिसमें युवाओं के लिए महाविद्यालयी और अ-महाविद्यालयी अवसर (सुविधाएँ) शामिल हैं;
3) परामर्श विधियाँ और कार्यविधियाँ;
4) विचारार्थ भेजने (referral) की आवश्यकता की पहचान करने की निर्देश कार्यविधियाँ और कौशल;
5) समूह निर्देशन कार्यविधियाँ; और
6) विद्यार्थी की आवश्यकाताओं और उसके हेतु अवसरों के क्षेत्र में, स्थानीय अनुसंधान अध्ययनों को आयोजित करने में प्रविधियाँ और कार्यप्रणालियाँ।

उपबोधक वह व्यक्ति होता है जिसका चयन उपबोधन के प्रदत्त दायित्वों का निर्वहन करने में उसकी रुचि, प्रशिक्षण, अनुभव और उसकी क्षमता के आधार पर होता है। उपबोधक की जरूरत भविष्य के लिए विद्यार्थियों की सहायता करने, उनकी समस्याओं को सुलझाने, स्वस्थ मनोवृत्तियों को विकसित करने और अन्य शब्दों में कहा जाए तो उन्हें जीवन के लिए तैयार करने के लिए पड़ती है।

उपबोधक को अध्यापकों का अध्यापक होना चाहिए। वह विद्यालय के निर्देशन कार्यक्रम के संचालन के लिए उत्तरदायी होता है। उसे योजना बनाने और कक्षा में अच्छी मार्गदर्शन व्यवस्थाओं (practices) को विकसित करने में अध्यापकों की सहायता करनी चाहिए।

उपबोधक के पास उच्च क्षमता (competency) होनी चाहिए तथा व्यापक और विभिन्न प्रकार के अनुभव होने चाहिए। उसे बालकों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उसके लिए शिक्षण अनुभव अनिवार्य है। व्यावसायिक अथवा विद्यालयेत्तर (non-school) कार्य का पूर्व अनुभव अत्याधिक वांछनीय होता है। परामर्श और मार्गदर्शन के क्षेत्र में पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है। उपबोधक व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए उपलब्ध होना चाहिए, उसे मित्रवत् होना चाहिए, वह लोगों द्वारा पसंद किये जाने वाला तथा समझदार और संतुलित व्यक्ति होना चाहिए।

उपबोधक की समुदाय में जिम्मेदारी होती है। उसे नागरिक समूहों के साथ बातचीत करनी चाहिए तथा निर्देशन कार्यक्रम के उद्देश्य, उसकी समस्याएँ और उसकी विशेषताएँ स्पष्ट करनी चाहिए।

उपबोधक वृत्तिक विकास कार्यक्रम के संसाधक (facilitator) के रूप में कार्य करता है। परंतु कार्यक्रम का प्रभावी संचालन तथा निष्पादन विभिन्न प्रकार के समूह के साथ तालमेल करने पर निर्भर करता है जैसे अन्य स्टाफ सदस्य, अभिभावक, प्रशासनिक एवं समुदाय प्रतिनिधि। उपबोधक को अनेक वृत्तिक विकास सामग्री की अध्ययन, जानकारी रखनी पड़ती है तथा वृत्तिक विकास से जुड़े कौशकों और ज्ञान को सुधारने के लिए, व्यावसायिक अनुभवों में भाग लेना पड़ता है।

उपबोधक,

- व्यापक वृत्तिक विकास कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रयास आरंभ करने हेतु नेतृत्व प्रदान करता है।
- अध्यापकों/अध्यापिकाओं, विद्यार्थियों, अभिभावकों, समुदाय, विषय विशेषज्ञों आदि को कार्यक्रम में शामिल करता है।
- कक्षा में प्रयोग के लिए विद्यार्थियों के अधिगम अनुभवों और क्षमताओं (competencies) की योजना बनाता है।
- स्वयंसेवकों, विशेष आवश्यकता वाले स्टाफ, विद्यालय की स्वास्थ्य नर्सों, अर्ध-व्यावसायिकों (para-professionals) और अन्य विद्यार्थियों को शामिल करता है।
- वृत्तिक विकल्पों का पता लगाने में विद्यार्थियों की सहायता करता है और व्यक्तिगत तथा समूह वृत्ति विकास कार्यकलापों के माध्यम से वृत्तियों (व्यवसायों) के लिए मार्ग प्रशस्त करता है/योजना बनाता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

4) रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरिए :

i) उपबोधक के उत्तरदायित्व के विशिष्ट क्षेत्रों को निदानशास्त्र ..... मूल्यांकन तथा अनुसंधान में वर्गीकृत किया जा सकता है।

ii) उपबोधक विद्यालयों में ..... मार्गदर्शन कार्यकर्ता होता है।

iii) ..... कार्यक्रम का विकास उपबोधकों के कार्यों में से एक है।

iv) उपबोधक ..... का अध्यापक होता है।

3.5.2 वृत्तिक उपबोधक

मार्गदर्शन कार्यक्रम में उपबोधक के बाद वृत्तिक उपबोधक आता है। आजकल इस शब्द ने वृत्तिक अध्यापक का स्थान ले लिया है। विद्यालय का नियमित अध्यापक जो सूचना सेवा (शैक्षिक और वृत्तिक) उपलब्ध कराता है उसे वृत्तिक उपबोधक/अध्यापक कहा जाता है। यह व्यक्ति प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक होता है जिसे इस कार्य के लिए तैयार रहने का विशेष प्रशिक्षण मिला होता है।

वृत्तिक उपबोधक के उत्तरदायित्व उपबोधक की तुलना में कार्यक्षेत्र के अनुसार सीमित होते हैं परंतु वे अनिवार्य सेवा का अंग होते हैं। वृत्तिक उपबोधक की प्रमुख जिम्मेदारियाँ शैक्षिक और व्यावसायिक सूचना सेवा तथा तत्संबंधी कार्य से जुड़ी हुई हैं। उसे उपबोधक की अनुपस्थिति में विद्यालय में ये सभी कार्य करने होते हैं जैसा कि हमारे अनेक विद्यालयों में होता है।

सेवारत अध्यापकों के औपचारिक प्रशिक्षण में सूचना सेवाएँ भी शामिल हैं जो वृत्तिक उपबोधक के रूप में कार्य करने के लिए किसी व्यक्ति के लिए जरूरी है। इस प्रकार का प्रशिक्षण राज्य के शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन ब्यूरो द्वारा दिया जाता है और इस प्रकार के पाठ्यक्रमों की अवधि 2 से 4 सप्ताह तक होती है।

एक पाठ्यक्रम में निर्देशन कार्यक्रम की आवश्यकता और कार्यक्षेत्र के लिए अभिमुखीकरण शामिल है। प्रशिक्षण के माध्यम से सूचना सेवा आयोजित करने और प्रदान करने पर बल दिया जाता है। विद्यार्थी आकलन की गैर-परीक्षण तकनीकों के प्रयोग और संचयी अभिलेख पत्र के रखरखाव की दिशा में अभिमुखीकरण प्रदान किया जाता है। परंतु वृत्तिक परामर्शदाता परीक्षण और परामर्श में प्रशिक्षित नहीं होता। उससे आशा की जाती है कि उसे अपने समुदाय के संसाधनों के बारे में जानकारी हो जिसमें वे अभिकरण भी शामिल हैं जिनसे परामर्श किया जा सके।

वृत्तिक उपबोधक से निम्नलिखित कार्य करने की अपेक्षा की जाती है :

1) निर्देशन समिति का निर्माण

2) विद्यालय में सूचना केंद्र की स्थापना

3) नए प्रवेशार्थियों के लिए अभिमुखीकरण वार्ता

4) समाचार एलबम और बुलेटिन बनाना

5) संचयी अभिलेख पत्रों की देखभाल

6) आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत सत्रों का आयोजन

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

5) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) वृत्तिक उपबोधक और वृत्तिक अध्यापक समान नहीं है। (सही / गलत)

ii) विद्यालय में कोई भी अध्यापक अभिमुखीकरण के बाद वृत्तिक परामर्शदाता हो सकता है। (सही / गलत)

iii) वृत्तिक उपबोधक को औपचारिक प्रशिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं होती। (सही / गलत)

iv) वृत्तिक उपबोधक परीक्षण कार्य कर सकता है क्योंकि वह निर्देशन कार्मिक होता है। (सही / गलत)

v) वृत्तिक उपबोधक का दायित्व विद्यार्थियों को केवल वृत्तिक सूचना प्रदान करना है। (सही / गलत)

4.5.3 अध्यापक

ऐसे किसी भी कार्यक्रम में जिसमें विद्यार्थी भी शामिल हों। अध्यापक का समर्थन और सहभागिता आवश्यक होती है। विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम भी इसका कोई अपवाद नहीं है। विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम में अध्यापक की भूमिका निम्नलिखित है :

1) विद्यार्थी और विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के बीच प्रथम संपर्क।

2) विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और समस्याओं की पहचान।

3) शैक्षिक और वृत्तिक नियोजन के लिए विद्यालय में वृत्तिक सूचना केंद्र की स्थापना और रखरखाव।

4) कक्षा में विद्यार्थियों के लिए समरसतापूर्ण और स्वस्थ पर्यावरण सृजित करना।

5) विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के लिए प्रेरणाप्रद वातावरण का संवर्धन और सृजन करना।

6) विद्यालय निर्देशन कार्यक्रम के लिए विद्यार्थियों, अभिभावकों और सभी अन्य संबंधित व्यक्तियों में सकारात्मक अभिवृत्ति पैदा करना।

अध्यापक मुख्य परिवर्तनकारक (master molder) होता है। निर्देशन कार्यक्रम का कर्ताधर्ता स्वयं अध्यापक ही होता है। मार्गदर्शन, अध्यापन और अधिगम प्रक्रिया (teaching and learning process) का अभिन्न अंग है। बालक के अभिभावकों को छोड़कर, कक्षा अध्यापक के सिवा ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसका बालक के व्यक्तित्व के विकास पर अधिक प्रभाव पड़ता हो।

निर्देशन प्रेमी अध्यापक, विद्यालय का ही वह व्यक्ति होता है जो बालक के बारे में सर्वाधिक जानता है। वह बालक को कक्षा में और कक्षा के बाहर अलग-अलग परिस्थितियों में देखता है। वह उसकी हताशापूर्ण, ऊबाऊ और उद्दीपक परिस्थितियों को देखता है। बालक की आवश्यकताओं संबंधी गहन अंतर्दृष्टि विकसित करने के परिणामस्वरूप अध्यापक, विद्यालय निर्देशन व्यक्तियों के बीच एक मुख्य व्यक्ति बन जाता है।

विद्यार्थी निर्देशन कार्य को पूरा करने के लिए अध्यापक अनेक तकनीकों का प्रयोग करता है। वह विद्यार्थी और उसके पर्यावरण संबंधी अवसरों की जानकारी प्राप्त करता है। अध्यापक परीक्षण करके, प्रेक्षण करके, विस्तृत रिकार्ड रखकर और विद्यार्थियों, अभिभावकों और अन्य व्यक्तियों के साथ बातचीत करके गहरी जानकारी प्राप्त करता है। विद्यार्थी के जीवन के कई तथ्य अध्यापक के समक्ष स्पष्ट किए जाते हैं। विद्यार्थी को जानना निर्देशन के लिए अनिवार्य आधार है। चूँकि अध्यापक विद्यार्थी की अधिक कठिन समस्याओं से अवगत हो जाता है, इसलिए वह उसका निर्देशन करने में सफल हो सकता है अथवा ऐसे मामलों में विशेषज्ञों के पास भेज सकता है।

निर्देशन कार्यकर्ता के रूप में अध्यापक

अध्यापकों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निर्देशन कार्यकर्ता समझा जाता है। विद्यार्थियों के साथ अन्य स्टाफ के सदस्यों की अपेक्षा उसका संबंध और साहचर्य एक अलग किस्म का होता है। तथापि अधिकांश अध्यापक सोचते हैं कि वे इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए पूरी तरह से योग्य नहीं हैं। आवश्यकता की यह अनुभूति सेवारत प्रशिक्षण के माध्यम से निर्देशन सूचना और उसकी तकनीक को सर्वसुलभ बनाकर सर्वोत्तम ढंग से पूरी की जा सकती है। यदि अध्यापकों को निर्देशन कार्यक्रम में पूरी भूमिका निभानी है तो उनकी अनिश्चितता की भावनाओं को दूर करना जरूरी है।

अच्छे निर्देशन का दायित्व अध्यापन भार के अतिरिक्त भार न होकर उसी का एक अभिन्न अंग है। इसे अतिरिक्त दायित्व/भार नहीं बनाया जाना चाहिए।

अध्यापक को निर्देशन कर्मी के नाते अपनी कक्षा में व्यक्तिगत समस्या की पहचान करने के योग्य होना चाहिए और साथ ही इन समस्याओं को समझबूझ के साथ निपटाने के योग्य होना चाहिए। विद्यार्थी की सहायता करने में अध्यापक अन्य विषयों के अध्यापकों से सहयोग ले सकता है। अध्यापक को परीक्षा परिणाम, उपलब्धि अभिक्षमता (aptitute), अभिरुचियों और स्वभाव (temperament) का अध्ययन करना चाहिए। अध्यापक को विद्यार्थी की शिक्षा की योजना और उसके व्यावसायिक लक्ष्यों को जानना चाहिए। अध्यापक को विद्यार्थी की रुचियों और अरुचियों, समस्याओं और कुंठाओं की जानकारी रखनी चाहिए। अध्यापक कुसमायोजनों को रोक सकता है। विभिन्न विषय पढ़ाने वाले अध्यापकों तथा शारीरिक शिक्षा, योग आदि पाठ्यक्रमों के अध्यापकों के पास विद्यार्थियों के साथ निकट संपर्क स्थापित करने के अवसर होते हैं। अध्यापक अपने विद्यार्थियों का निर्देशन करने में दो प्रमुख कार्य करता है; कक्षा परामर्श और व्यावसायिक निर्देशन।

कक्षा उपबोधक के रूप में अध्यापक को प्रत्येक विद्यार्थी में व्यक्तिगत, सामाजिक और शैक्षिक गुणों को विकसित करने का पूरा प्रयास करना चाहिए। एक व्यावसायिक निर्देशक के रूप में अध्यापक के पास उनकी व्यावसायिक योजनाओं के साथ विद्यार्थियों की सहायता करने के अवसर हैं।

अध्यापकों का सहयोग : अध्यापक निम्नलिखित तीन आधारों पर विशेषज्ञों के साथ सहयोग करते हैं :

1) उन विशेष विद्यार्थियों की पहचान करना जिन्हें विशेषज्ञ की सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

2) उल्लिखित विद्यार्थियों के बारे में सूचनाएँ देना।

3) किसी व्यक्ति अथवा समूह के लिए विशेषज्ञ की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए सहायता करना।

पढ़ाते समय निर्देशन के लिए अध्यापकों के अवसरों को संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है। इनमें सात प्रकार के कार्य हैं :

1) निजी संबंधों का प्रयोग करना

2) आत्मसम्मान और क्षमता सृजित करना

3) अनुदेश का वैयक्तिकरण करना

4) दैनिक अधिगम का मार्गदर्शन करना

5) विद्यार्थियों के साथ शैक्षिक लक्ष्यों पर चर्चा करना

6) सामान्य समस्याओं पर विवेचन करना

7) विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की ओर निरंतर ध्यान देना।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

6) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) अध्यापक मूलरूप से निर्देशन कार्यकर्ता होता है। (सही / गलत)

ii) विद्यालय में निर्देशन कार्य करने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। (सही / गलत)

iii) निर्देशन कार्यक्रमों में अध्यापक की भूमिका सहयोगात्मक होती है। (सही / गलत)

iv) अध्यापक अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित नहीं करता। (सही / गलत)

v) अध्यापकों में यह भावना होती है कि वे विद्यालयों में निर्देशन कार्यकलाप कराने के लिए पूरी तरह से योग्य नहीं होते हैं। (सही / गलत)

vi) अध्यापक को निर्देशन कार्यक्रम में अन्य अध्यापकों के सहयोग की कोई आवश्यकता नहीं होती। (सही / गलत)

3.5.4 उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की तुलनात्मक भूमिकाएँ

आइए, अब हम निर्देशन कार्यक्रम में प्रत्येक मार्गदर्शन कार्मिक जैसे उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिका की चर्चा करें। यद्यपि इन तीनों कार्मिकों का उद्देश्य विद्यालयों में मार्गदर्शन कार्यकलाप आयोजित करके विद्यार्थियों की सहायता करना है, फिर भी इनमें से प्रत्येक कार्मिक की विशेष भूमिका होती है। यह भूमिकाएँ विरोधी नहीं है परंतु

एक-दूसरे की पूरक हैं। इनमें से प्रत्येक की विशिष्ट भूमिका उनकी पृष्ठभूमि और उनके अपने विद्यालयों के बुनियादी ढांचे और उनके अपने स्कूल में उपलब्ध सुविधाओं, समय व्यवस्था, बजट आदि पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी विशेष संस्था में कोई पूर्णकालिक उपबोधक है तो यह निश्चित है कि उस विद्यालय में सही अर्थों में मार्गदर्शन होगा। ऐसी स्थिति में, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिका सहयोगात्मक हो जाती है। परंतु यदि कोई पूर्णकालिक निर्देशन उपबोधक नहीं है तो वृत्तिक उपबोधकों और अध्यापकों की भूमिका विद्यालयों में न्यूनतम आवश्यकता आधारित कार्यक्रम आयोजित करने में अधिक व्यावहारिक हो जाती है। इस समय हमारे अनेक विद्यालयों में यही स्थिति है। अतः प्रत्येक कार्मिक अर्थात् उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिका की तुलना उनकी व्यावसायिक पृष्ठभूमि, निर्देशन कार्यक्रम के प्रकार, उपलब्ध संसाधनों आदि के अनुसार निम्नलिखित रूप से की जा सकती है :

माध्यमिक विद्यालय स्तर

	उपबोधक	**उपबोधक / अध्यापक**
1.	कक्षा सत्र, ''भविष्य के लिए वृत्तियों (व्यवसाय)'' के कार्यक्रम आयोजित करता है	उपबोधक के साथ कार्यकलापों की योजना तैयार करता है
2.	''रहने और काम करने के लिए कौशल'' सत्र आयोजित करता है	रहने और काम करने के लिए अनुशासन के महत्त्व को दर्शाने वाले कार्यकलापों की योजना तैयार करता है
3.	अभिरुचि तालिका बनाता है	उपबोधक की सहायता करता है
4.	कार्मिक आवश्यकताओं और अपेक्षाओं पर ''समूह सत्र आयोजित करता'' है	ऐसे कार्यकलाप आयोजित करता है जो विद्यार्थियों को निजी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं का मूल्यांकन करने के लिए चुनौती देते हैं
5.	''उद्यमवृत्ति'' पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	कक्षा सत्र और कार्यकलापों की योजना तैयार करता है
6.	''वृत्तिक लक्ष्य पर आयोजित उच्च विद्यालयी पाठ्यचर्या की योजना बनाने पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	विभिन्न वृत्तियों के साथ पाठ्यक्रम को जोड़ता, ऐसे कार्यकलापों की योजना बनाता है जो विद्यार्थियों को उनके वृत्तिक लक्ष्यों की संभावनाओं को जानने के अवसर प्रदान करते हों
7.	''रोज़गार के लिए तैयारी'' पर समूह एवं व्यक्तिगत सत्र की योजना बनाता है	भावात्मक और भौतिक विकास पर विवेचना करता है और बताता है कि वे रोज़गार के अवसरों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं
8.	भूमिका निर्वाह सत्र (role playing sessions) और अन्य कार्यकलापों की योजना बनाता है	उपबोधक के साथ कार्यकलापों की योजना बनाता है
9.	वृत्तिक समूह और व्यवसाय पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समायोजन करता है

10. विभिन्न वृत्तिक अवसरों (प्रशिक्षुता– apprenticeship कॉलेज, प्रारंभिक विद्यालय, तकनीकी, कार्यरत आदि) को दर्शाने वाले कार्यकलापों की योजना बनाता है	सत्रीय कार्यों (लिखित और अलिखित) के साथ कार्यकलापों में सहयोग करता है, मीडिया विशेषज्ञ सूचना और सामग्री प्रदान करता है
11. कक्षा सत्र आयोजित करता है कि व्यवसाय/उद्योग समुदाय में जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं, इस पर विवेचना करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
12. वृत्तिक सूचना के लिए उपलब्ध संसाधनों की जाँच करता है/का पता लगाता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
13. ''नियोक्ता नियुक्ति किये गये लोगों से क्या आशा करता है'' विषय पर व्यक्तिगत परामर्श और कक्षा सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
14. वित्तीय सहायता पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
15. कार्यस्थल पर विद्यार्थी प्रायोगिक सत्रीय कार्यों की व्यवस्था करता है	दिए गए कार्य अनुभव पर आधारित मौखिक और लिखित सत्रीय कार्यों की योजना बनाता है
16. ''कार्य आचार संहिता'' (work ethic) पर समूह एवं पृथक (व्यक्तिगत) सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
17. विद्यार्थियों को वृत्तिक सूचना संसाधन उपलब्ध कराता है और उनकी सहायता करता है	सूचना का प्रयोग करते हुए कार्यकलाप आयोजित करता है
18. ''तनाव और दुश्चिंता के लक्षण और उनका किस प्रकार सामना किया जाय'' विषय पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
19. रोज़गार ढूँढने के कौशलों से जुड़े समूह कार्यकलापों का समन्वय करता है और उनका अनुवेक्षण करता है	उन कार्यकलापों की योजना बनाता है जिनमें रोज़गार ढूँढने के कौशल शामिल होते हों
20. ''व्यक्तिवृत्त (सारवृत्तों), आवेदन और साक्षात्कार'' पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	व्यक्तिवृत्त लिखने, आवेदनपत्र लिखने तथा साक्षात्कार में भाग लेने के कौशलों को विकसित करने के लिए उपबोधक से समन्वय करता है
21. ''अर्थव्यवस्था और रोज़गार'' पर समूह सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
22. ''समाज की आवश्यकताएँ किस प्रकार व्यवसाय और उद्योग को प्रभावित करती है'' इस विषय पर कक्षा सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
23. वृत्तियों से जुड़ी जीवन-शैलियों पर विवेचना करके व्यक्तिगत और समूह सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है

24. ''वृत्तिक निर्णयों'' पर व्यक्तिगत एवं समूह विवेचना सत्र आयोजित करता है	''निर्णय-निर्धारण कौशल'' विकसित करने से संबंधित कार्यकलाप सत्र आयोजित करता है
25. ''आपका स्वास्थ्य और आपका कैरिअर'' विषय पर विद्यार्थियों के लिए व्यक्तिगत सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
26. रोज़गार मेला आयोजित करने के लिए कक्षा सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है
27. ''वृत्तियों और जीवन पर्यंत सीखते रहने पर व्यक्तिगत एवं समूह सत्र आयोजित करता है	उपबोधक के साथ समन्वय करता है

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

7) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) निर्देशन कार्यक्रम आयोजित करने में उपबोधकों को वृत्तिक उपबोधक ओर अध्यापक की आवश्यकता पड़ती है। (सही / गलत)

ii) उपबोधक, वृत्तिक परामर्शदाता और अध्यापकों की भूमिकाएँ समान होती हैं। (सही / गलत)

iii) उपबोधक विद्यालयों में उपबोधन (मामलों) को लेने के लिए पूरी तरह से साधनों से लैस नहीं होता है। (सही / गलत)

iv) किसी विद्यालय में वृत्तिक सूचना केंद्र की देखभाल केवल उपबोधक द्वारा की जानी चाहिए। (सही / गलत)

v) अध्यापक अपना शिक्षण विषय वृत्तियों से जोड़ सकता है। (सही / गलत)

3.6 विद्यालयों में आवश्यकता आधारित न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम और कार्मिकों की भूमिका

विद्यालयों में व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम के लिए एक पूर्णकालिक उपबोधक, बुनियादी ढाँचे, विभिन्न सामग्रियों (परीक्षण, परीक्षणेत्तर, सूचना आदि) और पर्याप्त बजट की आवश्यकता पड़ती है। इनके अभाव में, आवश्यकता आधारित न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रमों को विद्यालयों में आयोजित किया जा सकता है। वृत्तिक उपबोधक / अध्यापक निर्देशन के बारे में अपने सेवारत प्रशिक्षण के आधार पर इन कार्यक्रमों को आरंभ कर सकता है। वास्तव में, समूह निर्देशन कार्यकलाप इस प्रयास में बिल्कुल ठीक बैठते हैं। निम्नलिखित चरण विद्यालयों में न्यूनतम निर्देशन कार्यकलापों के आयोजन में शामिल हैं :

1) निर्देशन समिति का निर्माण

2) कार्य के वार्षिक कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना

3) निर्देशन समिति की बैठक

4) नए प्रवेशार्थियों का अभिमुखीकरण

5) विभिन्न प्रकार के समूह-निर्देशन-कार्यकलाप जैसे :

   i) कक्षा वार्ता

   ii) वृत्तिक वार्ता

   iii) वृत्तिक सम्मेलन

   iv) वृत्तिक विज़िट

   v) वृत्तिक मेला

   vi) वृत्तिक केंद्र और उसकी देखभाल

निर्देशन समिति का निर्माण

निर्देशन समिति बनाते समय, समिति की संरचना निम्नलिखित होनी चाहिए :

i)	प्रधान अध्यापक / प्रधानाचार्य	–	अध्यक्ष
ii)	उपबोधक / वृत्तिक उपबोधक / अध्यापक	–	सचिव
iii)	विभिन्न विषयों के सभी अध्यापक	–	सदस्य
iv)	ग्राम पंचायत / नगरपालिका का अध्यक्ष	–	सदस्य
v)	स्थानीय / माध्यमिक विद्यालय का प्रधान अध्यापक	–	सदस्य
vi)	स्कूल प्रबंधन समिति के प्रतिनिधि	–	सदस्य
vii)	अभिभावक, अध्यापक, संघ के प्रतिनिधि	–	सदस्य
viii)	स्थानीय चिकित्सक	–	सदस्य
ix)	कृषि विभाग का प्रतिनिधि	–	सदस्य
x)	उद्योग और वाणिज्य विभाग का प्रतिनिधि (विस्तार कार्यकर्ता)	–	सदस्य
xi)	पुलिस विभाग का प्रतिनिधि	–	सदस्य
xii)	स्वैच्छिक अभिकरणों जैसे – रोटरी, लायन, जेयसी, क्लब आदि के प्रतिनिधि	–	सदस्य

इस निर्देशन समिति की बैठक कार्यसूची पर कार्रवाई करने के लिए उसके स्वरूप और विचार-विमर्श के आधार पर एक या दो महीने में एक बार होनी चाहिए। यह समिति नीति-निर्धारण के साथ-साथ प्रगति समीक्षा निकाय के रूप में भी होती है।

वृत्तिक उपबोधक अथवा अध्यापक को निर्देशन समिति की सहायता से निर्देशन कार्य का वार्षिक कार्यक्रम विकसित करना होगा तथा समिति से उसका अनुमोदन करता होगा। वार्षिक कार्य योजना आवश्यकता आधारित योजना होना चाहिए और इससे संबंधितों के नियमित कार्य में बाधा नहीं पहुँचनी चाहिए।

नए प्रवेशार्थियों का अभिमुखीकरण

नए प्रवेशार्थियों के लिए अभिमुखीकरण कार्यकलाप किए जाने की आवश्यकता है ताकि वे नए पर्यावरण में भली-भांति समायोजित हो जाएँ और विषय सामग्री को स्वतंत्रतापूर्वक सीख सकें। यह कार्य समूह में और व्यक्तिगत कार्यकलापों के माध्यम से किया जा सकता है। जैसे सभाएँ आयोजित करना, कक्षा वार्ताएँ आयोजित करना, विद्यालय विनिमयों और कार्यक्रमों पर चर्चा कराना तथा समायोजन में व्यक्तिगत सहायता उपलब्ध कराना।

कार्मिकों के संदर्भ में समुदाय संसाधन

स्थानीय समुदाय के सदस्य स्वयं एक संसाधन होते हैं। विभिन्न संस्थाएँ जो कि मानव संसाधन विकास कार्यों से जुड़ी हैं जैसे वाई.एम.सी.ए., वाई.डब्ल्यू.सी.ए., स्काउट और गाइड, लॉयन्स, जेयसी, रोटरी आदि विभिन्न प्रकार की सेवा समुदाय में करती हैं। अभिभावकों का बालक के निर्देशन में सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वे पृथक रूप से और संगठित समूहों जैसे अभिभावक शिक्षक संघ और पारिवारिक जीवन शिक्षा में सांध्य कक्षाओं के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं।

विभिन्न संगठनों अथवा विभागों जैसे स्वास्थ्य कार्यालय, मनोचिकित्सीय निदान केंद्रों (psychiatric clinics), कल्याण अभिकरणों (welfare agencies), पुलिस विभागों, अग्निशमन विभागों, औद्योगिक और व्यावसायिक संगठनों और लगभग सभी सामुदायिक संस्थाओं में तकनीकी और व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित कार्मिक समय-समय पर विद्यालयों में मार्गदर्शन कार्मिकों की भूमिका निभा सकते हैं।

विद्यार्थियों पर प्रभाव डालने वाले सभी लोगों को ऐच्छिक एवं गैर-अधिकारी निर्देशन कार्मिक माना जा सकता है। कार्यक्रम को निर्देशित करने का दायित्व वृत्तिक उपबोधक/अध्यापक का होता है तथा अन्य व्यक्ति केवल अनुपूरक संसाधन (supplmentary resources) होते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

8) निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत, उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाकर बताइए।

i) उपबोधक को विद्यालयों में केवल न्यूनतम निर्देशन कार्यकलाप करने चाहिए। (सही/गलत)

ii) वृत्तिक उपबोधक अथवा अध्यापक विद्यालयों में केवल समूह निर्देशन के कार्यकलाप आयोजित कर सकता है। (सही/गलत)

iii) विद्यालयों में निर्देशन समिति की कोई आवश्यकता नहीं होती। (सही/गलत)

iv) निर्देशन समिति में केवल प्रशिक्षित कार्मिक होने चाहिए। (सही/गलत)

v) निर्देशन समिति की बैठक वर्ष में एक बार होनी चाहिए। (सही/गलत)

vi) निर्देशन कार्यकलापों के वार्षिक कार्यक्रम की रूपरेखा केवल प्रधानाचार्य/प्रधान अध्यापक द्वारा बनाई जाएगी। (सही/गलत)

vii) नए प्रवेशार्थियों के लिए अभिमुखीकरण की बिल्कुल भी आवश्यक नहीं होती। (सही/गलत)

viii) समूह निर्देशन कार्यकलाप न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किए जा सकते हैं। (सही/गलत)

ix) न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम केवल विद्यालय में उपलब्ध बजट पर निर्भर होता है। (सही/गलत)

x) न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रमों में स्कूल के सभी लोगों की सहायता की आवश्यकता होती है। (सही/गलत)

3.7 सारांश

इस इकाई में हमने निर्देशन कार्यक्रम की संक्षेप में विवेचना की है। हमने विभिन्न कार्मिकों जैसे उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापकों की आवश्यकता और उनकी भूमिका का भी विवेचन किया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कार्मिक की तुलनात्मक एवं सहयोगात्मक भूमिकाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही, विद्यालयों में आवश्यकता आधारित न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम और कार्यक्रम को आयोजित करने में कार्मिकों की भूमिका से भी आपको परिचित कराया गया है। इसके अतिरिक्त हमने एक निर्देशन समिति गठित करने की आवश्यकता, उसे किस प्रकार गठित करें और उसके क्या-क्या कार्य हो पर भी चर्चा की है। चर्चा का एक अन्य विषय स्कूल निर्देशन कार्यक्रम में स्थानीय संसाधनों के प्रयोग का महत्त्व भी रहा है।

3.8 इकाई के अंत में अभ्यास कार्य

1) निर्देशन कार्यक्रमों में निर्देशन की आवश्यकता और कार्मिकों की विवेचना कीजिए।

2) निर्देशन कार्यक्रम की प्रक्रिया में उपबोधकों, वृत्तिक उपबोधकों और अध्यापकों की भूमिका का विवेचन और निरूपण प्रस्तुत कीजिए।

3) उपबोधक, वृत्तिक उपबोधक और अध्यापक की भूमिकाओं की तुलना कीजिए।

4) एक विद्यालय का दौरा कीजिए जहाँ पूर्णकालिक उपबोधक कार्य करता है और निर्देशन कार्यक्रम के स्तर का पता लगाइए। इस संबंध में एक संक्षिप्त रिपोर्ट लिखिए।

5) दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए अपने विद्यालय में आवश्यकता आधारित न्यूनतम निर्देशन कार्यक्रम का आयोजन कीजिए।